यीशु की शिक्षाएँ II

टिप्पणियाँ —

यीशु की शिक्षाएँ **II:** पाठ्यक्रम

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय।

II. संसार का इतिहास:

क. परमेश्वर की छुटकारे की योजना।

ख. अंतिम बातें।

कक्षा #२:

II. संसार का इतिहास: (जारी.)

ग. आत्मिक संसार।

III. मानवता:

क. धर्म।

ख. ठोकरें खिलने वाली बाधा - यीशु की - कठिनाई से स्वीकार की जाने वाली शिक्षाएँ।

कक्षा #३:

III. मानवता: (जारी.)

ग. मानव समस्याएँ।

घ. मानव संबंध।

IV. यह जीवन:

क. सफलता।

कक्षा #४:

IV. यह जीवन: (जारी.)

ख. गुण।

ग. एकता।

घ. धन।

कक्षा #५:

IV. यह जीवन: (जारी.)

ङ. पाप और मृत्यु।

परीक्षा।

टिप्पणियाँ —

सुसमाचार के सिद्धांत II: परीक्षा

संभावित २० बिन्दु प्रश्न

१) अंत के समय के चार परिणामों को सूचीबद्ध और व्याख्या करें (कोई संदर्भ नहीं चाहिए) पृष्ठ ४९।

२) शैतान के हथियारों को सूचीबद्ध करने और समझाने के लिए पाँच वचनों का प्रयोग करें (पृष्ठ ५७)।

३) पाखंड का पर्दाफाश करने के विभिन्न तरीकों को सूचीबद्ध करने और समझाने के लिए चार वचनों का प्रयोग करें (पृष्ठ ६०, ६१)।

४) लू का ११:२७, २८ और लूका १:४५-४८ का प्रयोग "कुंवारी मरियम की अंधभक्ति" के खिलाफ वाद-विवाद करने के लिए करें (पृष्ठ ६२)।

५) म त्ती १६:२६ और मरकुस ८:३६, ३७ का प्रयोग इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए करें, "क्या आवश्यक है?" (पृष्ठ ७०, ७१)।

६) पै से में स्वस्थ अदासीनता के विचार को विकसित करने के लिए निम्नलिखित वचनों का उपयोग करें: लूका १२:१५, ३:१०-१४, १६:१-१२ (पृष्ठ ७७)।

संभावित १० बिन्दु प्रश्न

१) यूहन्ना १७:३ में अनंत जीवन की परिभाषा को संक्षेप में समझाएं (पृष्ठ ५१)।

२) लूका ४ के अनुसार, आत्मिक युद्ध में विश्वासी के तीन हथियारों को सूचीबद्ध करें (पृष्ठ ५७)।

३) पाखंड से बचाव प्रदान करने के लिए मत्ती ५:३७ का उपयोग करें (पृष्ठ ६१)।

४) यीशु एक ठोकर खाने का पत्थर की अवधारणा का संक्षेप में वर्णन करें (पृष्ठ ६२, ६३)।

५) ठोकर खाने के अन्य प्रकारों का एक उदाहरण देने के लिए एक वचन का उपयोग करें (पृष्ठ ६३, ६४)।

६) भय से बचाव का वर्णन करने के लिए मत्ती १०:२८ का प्रयोग करें (पृष्ठ ६५)।

७) क्या स्वर्ग में विवाह होता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक वचन को संदर्भित करें (पृष्ठ ६६)।

८) यूहन्ना ७:१८ का उपयोग करके सफलता को परिभाषित करें (पृष्ठ ६८)।

९) एक बात को दर्शाने के लिए जिसके लिए नम्रता की आवश्यकता है एक वचन का उपयोग करें (पृष्ठ ७३)।

१०) लूका १६:१० में पाए जाने वाले सेवकाई के महत्वपूर्ण सिद्धांत को परिभाषित करें (पृष्ठ ७४)।

यीशु की शिक्षाएँ II

११) एक साधारण जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए मत्ती ६:३२ उपयोग करें (पृष्ठ ७७)।

१२) पाप के एक परिणाम को समझाने के लिए एक वचन का प्रयोग करें (पृष्ठ ८१, ८२)।

यीशु की शिक्षाएँ II

टिप्पणियाँ –

I. पाठ्यक्रम परिचय।

क. इस पाठ्यक्रम की पृष्ठभूमि

यीशु की शिक्षाएँ पाठ्यक्रमों की श्रृंखलाः

यह पाठ्यक्रम तीन पाठ्यक्रमों की दूसरी श्रृंखला है जो कि सुसमाचारों में पाए जाने वाली यीशु की शिक्षाओं के एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र के रूप में तैयार किया गया है । श्रृंखला तीन ''क्षेत्रों'' पर आधारित है। इसे अध्ययन के निम्नलिखित ''क्षेत्रों'' के अनुसार तीन पाठ्यक्रमों में विभाजित किया गया हैः

1) परमेश्वरः
(यीशु की शिक्षाएँ **I**, पिछला शीर्षक सुसमाचारों के सिद्धांत I)।

2) संसारः
(यीशु की शिक्षाएँ **II**, पिछला शीर्षक सुसमाचारों के सिद्धांत II)।

3) मसीहीयतः
(यीशु की शिक्षाएँ **III**, पिछला शीर्षक सुसमाचारों के सिद्धांत III)।

पाठ्यक्रम सामग्री ''सिद्धांतों'' (ऐसे विचार जो युगों से सत्य हैं) से बनी है जो एक के बाद एक सिद्धांतों की श्रृंखला के रूप में व्यवस्थित की गई है:

- सिद्धांत की प्रत्येक श्रृंखला एक ''विषय'' का निर्माण करती है।
- विषयों को ''विषयवस्तुओं'' में व्यवस्थित किया गया है।
- विषयवस्तुओं को ''श्रेणियों'' में व्यवस्थित किया गया है।
- श्रेणियों को तीन प्रमुख ''क्षेत्रों'' का निर्माण करने के लिए व्यवस्थित किया गया है।

हालांकि ये पाठ्यक्रम सुसमाचारों पर केंद्रित हैं, लेकिन कुछ श्रेणियाँ इन्हीं तक सीमित नहीं हैं। उदाहरण के लिए 'संप्रभुता' पूरे पुराने नियम और नए नियम में देखी जा सकती है। हालाँकि, हम केवल नए नियम के व्याख्यानों को देखेंगे जिन्हें सुसमाचार कहा जाता है।

याद रखें कि यह केवल नए नियम के सुसमाचारों से यीशु की शिक्षाओं का एक सर्वेक्षण है। संपूर्ण पाठ्यक्रम के एक अंतर्गत प्रत्येक विषय अपने आप में गहन अध्ययन को शामिल कर सकता है। आपको इस पाठ्यक्रम का उपयोग अपनी शिक्षा की सेवकाई के लिए संसाधन के रूप में करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

टिप्पणियाँ –

शिक्षण सुझाव:

रूपरेखा प्रवाह

रूपरेखा के बिन्दुओं का प्रवाह बहुत ज़रूरी है। प्रत्येक बिन्दु पिछले बिन्दु पर आधारित है। इस प्रकार, शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण कार्य बिन्दु से बिन्दु, विषय से विषय, विषयवस्तु से विषयवस्तु और श्रेणी से श्रेणी में जाने के लिए प्रभावशाली तरीके विकसित करना है। प्रवाह का बोध विकसित करने की योग्यता बहुत महत्वपूर्ण होती है। अक्सर सामग्री स्वयं इस ''प्रवाह'' का बोध प्रदान करती है। फिर भी शिक्षक को परिवर्तित वाक्य और विचारों को जोड़ना चाहिए।

प्रत्येक बिन्दु को प्रस्तुत करना

प्रत्येक बिन्दु पवित्रशास्त्र के वचन के साथ शुरू होता है। इसके बाद कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ होती हैं जो सिद्धांत की व्याख्या करती हैं और यह बताती हैं कि यह प्रवाह में किस प्रकार उपयुक्त ठहरेगी है। कभी-कभी सिद्धांत को दोहराया जाता है क्योंकि यह दो या अधिक विषयों के विकास को प्रभावित करता है। प्रत्येक शास्त्र भाग को कक्षा में जोर से पढ़ा जाना चाहिए। शिक्षक उन टिप्पणियों का उपयोग कर सकते हैं जो बिंदु की व्याख्या करने के लिए प्रदान की जाती है और यह दर्शाती है कि यह पिछले बिंदु (बिंदुओं) के साथ किसी प्रकार उपयुक्त बैठता है।

कक्षा में चर्चा

इस पाठ्यक्रम में सामग्री की चर्चा के लिए या संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आवंटित विशिष्ट ''चर्चा के बिंदु'' नहीं होंगे। सभी संभावित चर्चाओं की आशा करने के लिए कई विषय और मुद्दे हैं। यदि वे प्रस्तुति के दौरान कोई प्रश्न उठता या टिप्पणी आती है तो उन्हें अवसर दें।

सुसमाचार श्रृंखला

तीन पाठ्यक्रय एक श्रृंखला बनाते हैं और यदि संभव हो तो उन्हें एक के बाद एक पढ़ाया जाना चाहिए। यदि एक पाठ्यक्रम से सामग्री को समाप्त करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है तो शिक्षक पिछले पाठ्यक्रम में छोड़े गए बिंदु से श्रृंखला में अगला पाठ्यक्रम शुरू कर सकता है। यदि एक पाठ्यक्रम के अंत में अतिरिक्त समय है, तो शिक्षक अगले पाठ्यक्रम सामग्री की ओर बढ़ सकता है।

टिप्पणियाँ

ख. इस पाठ्यक्रम की सामग्री।

१. यह पाठ्यक्रम (श्रृंखला में दूसरा) तीन श्रेणियों में विभाजित है जो अध्ययन ''क्षेत्र'' का निर्माण करता है जिसे ''संसार'' कहते हैं।

२. तीन श्रेणियाँ हैं:

क. संसार का इतिहास।

ख. मानवता।

ग. यह जीवन।

II. संसार का इतिहास।

क. विषयवस्तु #१: परमेश्वर की छुटकारे की योजना।

१. विषय #१: छुटकारा।

क. यीशु खोए हुओं को बचाने के लिए आए। ''खोए हुओं को बचाना'' छुटकारे के सार की एक अच्छी परिभाषा है।

ख. यूहन्ना १:२९ . यीशु परमेश्वर का मेम्ना है जो संसार के पाप को उठा ले जाता है, जो पुराने नियम में बलिदान के मेम्ने के विपरीत है जिसने इस्राएल के पापों को दूर किया।

ग. मरकुस १५:३४ - यीशु को किसने मारा? कीलें, भाला, काँटे, मार-पीट आदि? वास्तव में हमारे पापों ने उसे मार डाला। यीशु का क्रूस हमारे पाप थे जिन्हें उसे अपने ऊपर ढोना था। परिणामस्वरूप उसने पिता से अलगाव को महसूस किया (रोमियों ६:२३)।

घ. मत्ती ११:११ . यीशु के अनुसार, यूहन्ना बपतिस्मादाता पुराने नियम का सबसे बड़ा किरदार था (मूसा, एलिय्याह, दाऊद आदि से आगे)। फिर भी सबसे छोटा मसीही भी यूहन्ना बपतिस्मादाता से बड़ा (छुटकारे के इतिहास में अधिक महत्वपूर्ण) है। अर्थात हम!

टिप्पणियाँ —

२. विषय #२: क्रूस।

क. लूका २४:२५, ४४ - यीशु के अनुसार, उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने की भविष्यद्वाणी पुराने नियम में की गई थी।

ख. यूहन्ना १८:१०, ११ – क्रूस मनुष्य के लिए ठोकर खाने का पत्थर है क्योंकि हमारे लिए इस तथ्य को स्वीकार करना कठिन है कि स्वयं परमेश्वर को हमारे पापों के लिए मरना पड़ा। पृथ्वी पर मसीह के अंतिम समय तक पतरस इस पत्थर से ठोकर खाता रहा।

ग. लूका १४:२७ – जो कोई अपना क्रूस (एक बलिदान बन जाता है) नहीं उठाता और यीशु का अनुसरण नहीं करता वह उसका चेला नहीं हो सकता।

घ. लूका १२:५१-५३ - क्रूस विश्वासियों और अविश्वासियों को विभाजित करता है।

ङ. लूका १२:४९, ५० - क्रूस न्याय की आग की जलती हुई लकड़ी है (देखें यूहन्ना ३:१७-२०)।

३. विषय #३: वाचाएँ।

क. लूका २४:२७, ४४ – यीशु सारी वाचाओं का केंद्र है। वह सारे वचनों में दिखाई देता है।

ख. यूहन्ना १:४१, ४५ – मसीहा का आना पुराने नियम (वाचा) की भविष्यद्वाणी थी।

ग. यूहन्ना १:१४ – यीशु नये नियम के लिए वह है जो मिलाप वाला तम्बू पुराने नियम के लिए था।

१) ''निवास'' शब्द का शाब्दिक अर्थ है ''तम्बू'' (जिसका अर्थ है किसी का तम्बू बनाना)।

२) ''महिमा'' के लिए संदर्भ हमें अक्सर मिलाप वाले तम्बू में परमेश्वर की उपस्थिति की ''शकीना'' महिमा की याद दिलाता है।

टिप्पणियाँ –

घ. मरकुस १५:३८ – जब यीशु की मृत्यु हुई तो पुराने नियम का स्थान नए नियम ने ले लिया।

१) मनुष्य अब यीशु के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकता है।

२) यीशु मंदिर का पर्दा बन गया। जब क्रूस पर यीशु की मृत्यु हुई तो पर्दा दो हिस्सों में फट गया।

ङ. लूका २३:४५ - मंदिर का पर्दा दो भागों में फट गया क्योंकि परमेश्वर के पास जाने के पुराने नियम के तरीके को समाप्त कर दिया गया। अब परमेश्वर के पास यीशु के माध्यम से पहुँचा जाता है जो नया और खुला पर्दा है।

ख. विषयवस्तु **#२:** अंतिम बातें।

१. विषय #१: एस्केटोलॉजी (जिसका अर्थ है अंतिम बातों का अध्ययन)।

क. अंत (अंतिम बातें)।

१) जब (देखें मरकुस १३:१० और मत्ती २४:१४) सारी जातियों को सुसामचार सुनाए जाने के बाद अंत आ जाएगा।

२) घटनाएँ जो अंतिम समय के संबंध में घटित होंगी।

क) मरकुस १३:६.१३ – मनुष्य खड़े होंगे और मसीह होने का दावा करेंगे। लड़ाईयाँ, आकाल और भूकम्प होंगे। परिवार के सदस्य एक दूसरें को मारेंगे और विश्वासियों से सब लोग घृणा करेंगे। ये कुछ घटनाएँ हैं जो अंत के समय के साथ होंगी।

ख) मरकुस १३:२० - झूठे मसीह उठ खड़े होंगे और बड़े चिन्ह् और चमत्कार दिखा कर लोगों (यहाँ तक कि मसीहियों) को यीशु से दूर करने का प्रयास करेंगे।

ग) लूका २१:८ – बहुत प्रगट होंगे और कहेंगे की वे यीशु हैं। उनका अनुसरण न करना।

घ) लूका २१:७,१०,११ - लड़ाईयाँ, भूकम्प, महामारियाँ, आतंक और स्वर्गीय चमत्कार इस बात की ओर संकेत करेंगे की अंत निकट है।

ङ)लूका २१:२०-२४ – अंत में यरूशलेम को सेनाओं द्वारा घेर लिया जाएगा और इसका नाश कर दिया जाएगा।

टिप्पणियाँ —

३) महाक्लेश।

क) मरकुस १३:१४-२३ - जब उजाड़ने वाली घृणित वस्तु अपने आप को मंदिर में स्थापित करेगी तो यह भागने का समय होगा। यह महाक्लेश के साथ जुड़ा हुआ प्रतीत होता है (शब्दों पर ध्यान दें, ''महाक्लेश जो न कभी हुआ और न होगा।'') यह देखन महत्वपूर्ण है कि इस समय के दौरान चुने हुए (मसीही) अभी भी चित्र में हैं।

ख) मरकुस १३:२० - परमेश्वर ने चुने हुओं के कारण महाक्लेश के दिनों को घटाया है। फिर से, हम देखते हैं कि मसीही महाक्लेश के समय पृथ्वी पर हैं।

ग) मरकुस १३:२७ - यीशु महाक्लेश के बाद लोटते हैं, जब सूर्य और चंद्रमा अपना प्रकाश नहीं देते और आकाश से तारे गिर पड़ते हैं। तब वह चुने हुओं (कलीसिया) को इकट्ठा (उठा लेता) है।

४) मसीह का पुनः आगमन (देखें मरकुस १३:२६, २७)। महाक्लेश के बाद उसका वापस लौटना।

५) यह पलक झपकते ही होगा।

क) लूका १७:२२.२४ - अंत में प्रभु के पुनःआगमन को देखने की बड़ी लालस होगी। ऐसे लोग होंगे जो परमेश्वर के राज्य को बनाने और उसका पालन करने की कोशिश करके इस लालसा का लाभ उठाने का प्रयास करेंगे। उनका अनुसरण न करें क्योंकि परमेश्वर का राज्य पलक झपकते ही स्थापित हो जाएगा।

ख) मत्ती २४:२७ . एक बहुत ही उपयोगी 'अंत के समय' का सिद्धांत यह है कि ऐसा कोई निर्णय नहीं है जिसे इस संबंध में किया जाना चाहिए कि यीशु वापस आ गया है या नहीं। हमें यह तय करने या पता लगाने की आवश्यकता नहीं है कि कोई यीशु है या नहीं। वे सब जो यह दावा करते हैं कि वे यीशु हैं धोखेबाज हैं क्योंकि यीशु का आना बिजली के समान होगा।

टिप्पणियाँ –

ख. अंत का परिणाम।

१) विनाश

क) लूका २१:३३ - आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे।

ख) मरकुस १३:३१ - आकाश और पृथ्वी नाश किए जाएंगे। वचन बना रहेगा।

२) न्याय।

क) लूका १०:११.१४ – न्याय का दिन ''उस दिन'' से संबंधित है पद १२, जो परमेश्वर के राज्य के पूर्णता में आने के साथ जुडा हुआ है (पद ११)।

ख) परमेश्वर का राज्य अभी अपनी पूर्णता में नहीं आया है, लेकिन तब आएगा जब न्यायी और उसका न्याय प्रगट होगा।

३) पुनरूत्थान (देखें यूहन्ना ६:४०)। यीशु विश्वासियों को अंतिम दिन में फिर से जीवित करेगा।

४) नयी देह (देखें लूका २४:३०-४३) नयी देह में मांस और हड्डियाँ हैं (पद ३०), फिर भी यह तुरन्त गायब हो सकती है (पद ३१) और फिर से प्रगट हो सकती है (पद ३६)। यह अपने संसारिक शरीर के समान विकृत है (पद ३९)। यह खाती है (पद ४३)।

टिप्पणियाँ —

२. विषय #२: मसीह का पुनःआगमन।

क. कब होगा ?

१) मरकुस १३:३२ - कोई नहीं लेकिन केवल पिता मसीह के पुनःआगमन के दिन और घड़ी को जानता है।

२) लूका २१:२९-३१ - हालांकि मसीहियों को उस समय के चिन्हों को जानना चाहिए।

३) लूका १७:२२ - अंत के दिनों में, मसीह के पुनः आगमन को देखने की लालसा का सोता विश्वासियों के हृदय में फूट निकलेगा।

४) मत्ती २४:२७ - एक बहुत ही उपयोगी 'अंत समय' सिद्धांत यह है कि ऐसा कोई निर्णय नहीं है जिसे इस संबंध में किया जाना चाहिए कि यीशु वापस आ गया है या नहीं। हमें यह तय करने या पता लगाने की आवश्यकता नहीं है कि कोई यीशु है या नहीं। वे सब जो यह दावा करते हैं कि वे यीशु हैं धोखेबाज हैं क्योंकि यीशु का आना बिजली के समान होगा।

ख. विश्वासियों के संबंध में मसीह की वापसी।

१) लूका १२:३५-४० - विश्वासियों को हमेशा सर्तक और यीशु के पुनः आगमन की बाट जोहते रहना चाहिए। चूंकि हम नहीं जानते कि वह कब लौटेगा हमें इस बात के प्रति सुनिश्चित रहना चाहिए कि हम हमेशा तैयार रहें।

२) लूका २१:३४-३६ – हमें इस संसार की चिंताओं के बारे में चिंतित होने से बचना चाहिए या अंत एक जाल के रूप में आ सकता है। हमें सतर्क रहना चाहिए। हमें हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए ताकि हम मज़बूत और मसीह के आगमन के लिए तैयार हो जाएँ।

३) लूका १२:४२ – तैयार और सर्तक रहना उन चीजों के भले भंडरी होने से जुड़ा है जो परमेश्वर ने हमें करने के लिए दी हैं।

४) यूहन्ना १४:२, ३ – यीशु स्वर्ग में विश्वासियों के लिए जगह तैयार करता है और हमें वहाँ ले जाने के लिए वापस आएगा।

टिप्पणियाँ –

ग. अविश्वासियों के संबंध में मसीह की वापसी।

१) लूका १७:२६-३० - संसार यीशु की वापसी की अपेक्षा नहीं करेगा। यह बिना किसी विशेष चेतावनी या घोषणा के अचानक होगा।

२) लूका १२:४०, ४६ - जो तैयार नहीं होगा और यीशु की वापसी की बाट नहीं जोहेगा वह यीशु के आगमन पर अचम्भित और निराश होगा।

३) लूका २१:२५-२७ - अंत से पहले, अविश्वासी समुद्र के गरजने और चाँद, तारों और सूरज के चिन्ह् देखकर घबरा जाएंगे। जब आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएंगी, तब आने वाली बातों को लेकर उनके मन में बड़ा भय होगा।

3. विषय #३: अनंतकाल।

क. अनंत जीवन।

१) यूहन्ना १७:३ - अनंत जीवन परमेश्वर को जानना है।

२) यूहन्ना ३:३६ - यीशु पर विश्वास अनंत जीवन की ओर ले जाता है।

३) मरकुस १०:२१ - अनंत जीवन की मिरास पाना अपना सब कुछ यीशु को देने से संबंधित है।

४) यूहन्ना १२:२५ - अनंत जीवन की मांग यह है कि पहले हम अपने संसार के जीवन को अप्रिय जानें।

ख. अनंत जीवन जैसा कि यह इस जीवन से संबंधित है।

१) मत्ती २०:२१, २२ - आनेवाले जीवन का पुरस्कार सीधे इस जीवन के कार्यों से संबंधित है जो हम इस पृथ्वी पर करते है। अनंतकाल में हमारा स्थान इस बात पर निर्भर करता है कि हम इस पृथ्वी पर क्या करते है।

क) हमें शायद यह कहना चाहिए कि जितनी अधिक मृत्यु (स्वयं के लिए) हम यहां अनुभव करेंगे, उतना अधिक जीवन हम वहां अनुभव करेंगे।

ख) इस प्रकार, यीशु इंगित करते हैं कि हमें अनुरोध करने में बुद्धिमानी से काम करना चाहिए।

टिप्पणियाँ —

२) लूका १४:१२-१४ - वास्तव में यीशु हमें उन तीरकों के बारे में सोचने के लिए उत्साहित करते हैं जिससे हम स्वर्ग में पुरस्कार पा सकें। समझने का एक बिंदु यह है कि हम चीजों को इस प्राकर करें कि हम अपने ऊपर ध्यान आकर्षित न करें। अर्थात् चीजों को इस प्रकार न करें कि हमें पृथ्वी पर फल मिलें।

३) यूहन्ना १२:२५ - अनंत जीवन की मांग है कि पहले हम अपने पृथ्वी के जीवन को अप्रिय जानें।

४) मरकुस ८:३८ - यदि आप यहाँ यीशु और सुसमाचार से लजाएंगे, तो वह भी वहां आपसे लजाएगा।

ग. अनंत जीवन में स्थान।

१) मत्ती २०:२३ - परमेश्वर ने प्रत्येक के लिए अपने राज्य में स्थान तैयार किया है।

२) मरकुस १०:४० - यहाँ तक कि परमेश्वर के द्वारा स्वर्ग में दिए जाने वाले पुरस्कार भी तैयार किए गए हैं। वह स्वर्ग में दिए जाने वाले स्थानों के ऊपर अधिकार रखता है।

३) यूहन्ना १४:२, ३ - यीशु स्वर्ग में विश्वासियों के लिए स्थान तैयार करता है और हमें वहाँ ले जाने के लिए वापस आएगा।

४) मत्ती २०:२१, २२ . आनेवाले जीवन का पुरस्कार सीधे इस जीवन के कार्यों से संबंधित है जो हम इस पृथ्वी पर करते है। अनंतकाल में हमारा स्थान इस बात पर निर्भर करता है कि हम इस पृथ्वी पर क्या करते हैं।

५) मत्ती १९:३० . जो इस समय यहाँ पृथ्वी पर पहला है वह स्वर्ग में अंतिम होगा। जो इस समय यहाँ पृथ्वी पर अंतिम है वह स्वर्ग में पहला होगा।

६) मत्ती २०:२२ - यीशु का अर्थ यह प्रतीत होता है कि स्वर्ग में उसके निकट स्थान प्राप्त करने के लिए आपका पृथ्वी का जीवन (और मृत्यु) उसके समान होना चाहिए।

टिप्पणियाँ

घ. अनंत जीवन का महत्व।

१) लूका १२:४, ५ – अनंत जीवन का महत्व तब समझ आता है जब यीशु कहते हैं कि हमें न तो मनुष्य से और न शैतान से डरना चाहिए। हमें केवल परमेश्वर का भय मानना चाहिए जिसे अनंत जीवन पर अधिकार है।

२) मत्ती १६:२६ और मरकुस ८:३६, ३७ – अनंतकाल के महत्व को हर चीज को सापेक्ष रूप से महत्वहीन बना देना चाहिए। परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता इसी सत्य पर निर्भर करती है। यह इस पर निर्भर करता है कि हम इस पर कितना विश्वास करते हैं।

क) परमेश्वर के प्रति आपकी प्रतिबद्धता की मात्रा और गुणवत्ता आपके विश्वास की मात्रा और गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

ख) संसार के प्रति आपकी प्रतिबद्धता की मात्रा आपके संदेह की मात्रा पर निर्भर करती है।

ग) यदि हमें संदेह नही है तो हम तार्किक रूप से वह सब कुछ देंगे जो हमें अनंत जीवन के लक्ष्य की ओर ले जाता है। हम ''अपना सब कुछ देंगे'' यह जानते हुए कि गलत होने में कोई जोखिम नहीं है (यह जानते हुए कि अंत में हम देखेंगे कि जो हमने विश्वास किया था वह वास्तव में सत्य था)।

घ) विश्वास के लोग प्रतिबद्ध लोग होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि खोने में कोई जोखिम नहीं है। निराश होने या अपने विश्वास के जीवन पर पछतावा करने का कोई जोखिम नहीं है। संदेह खेद के भय की ओर जाता है। खेद का भय इस संसार में संतुष्टि और आरम को प्राथमिकता देता है, कि यदि हम मर गए और महसूस करते हैं कि हमारा विश्वास सत्य नहीं था।

ङ) इस प्रकार, अनंत जीवन के महत्व में विश्वास की कमी का परिणाम परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्धता में कमी होगा।

३) मरकुस ९:४३-४८ - अनंत जीवन का महत्व हम से कहता है कि यदि आवश्यक हो तो हम अपनी एक आंख भी निकालने के लिए तैयार रहें। पिछले बिंदु की टिप्पणियों की समीक्षा करें।

टिप्पणियाँ —

ङ) स्वर्ग और नरक।

१) लूका १५:७, १० – जब एक पापी मन फिराता है तो स्वर्ग में स्वर्गदूतों के बीच आनंद होता है।

२) मत्ती २२:३० - स्वर्ग में विवाह नहीं होता।

३) मरकुस १२:२५ - पुनरूत्थान में (स्वर्ग में) हम विवाह नहीं करेंगें।

४) लूका २०:३५, ३६ - स्वर्ग में विवाह और मृत्यु नहीं है। हम स्वर्गदूतों के समान होंगे।

५) लूका २४:३०.४३ - नई देह में मांस और हड्डियाँ हैं (पद ३०), फिर भी यह तुरन्तु गायब हो सकती है (पद ३१) और प्रगट हो सकती है (पद ३६)। यह अपने पृथ्वी पर के शरीर के समान ही विकृत है (पद ३९)। यह खाता है (पद ४३)।

६) लूका १३:२८ - अविश्वासी दूसरों को परमेश्वर के राज्य में देखेंगे (स्वर्ग), लेकिन वे उस में प्रवेश नहीं कर पाएंगे। जब वे इसे देखेंगे वे रोएगें और दाँत पीसेंगे।

४. विषय #४: नरक।

ङ. मत्ती ७:१३ - नरक का मार्ग चौड़ा है (हमें मानववाद की भ्रामक प्रकृति की याद दिलाई गई है जो ''सहिष्णुता'' और ''स्थितिजनक नैतिकता'' को बढ़ावा देती है)। नरक जाने के बहुत से रास्ते हैं और बहुत लोग वहाँ जाएंगे।

च. लूका १३:२८ - अविश्वासी दूसरों को परमेश्वर के राज्य में देखेंगे (स्वर्ग), लेकिन वे उस में प्रवेश नहीं कर पाएंगे। जब वे इसे देखेंगे वे रोयेंगे और दाँत पीसेंगे।

छ. लूका १६:१९-२६ यीशु के पुनरूत्थान से पहले एक स्थान था जिसे अधोलोक कहते है, जहाँ पापियों को ताड़ना दी जाती है और धर्मी ''अब्राहम की गोद'' में थे। पापियों और धर्मियों को एक बड़ी खाई के द्वारा अलग किया गया था।

टिप्पणियाँ

ग. विषयवस्तु #३: आत्मिक संसार।

२. विषय #१: यह इस संसार का नहीं है।

क. यूहन्ना १५:१९ - हम इस संसार के नहीं है। यीशु ने हमें इस संसार से अलग किया है।

ख. मत्ती १०:२२ - संसार मसीहियों से बैर रखता है।

३. विषय #२: स्वर्गदूत।

क. लूका १५:७, १० - जब एक पापी मन फिराता है तो स्वर्ग में स्वर्गदूतों के बीच आनंद होता है।

ख. मत्ती १८:१० . ''छोटे से छोटो'' के पास अपने स्वर्गदूत प्रतीत होते हैं। जबकि इस संदर्भ में ''छोटे से छोटा'' एक मसीही है, हम कह सकते हैं कि मसीहियों के लिए स्वर्गदूत नियुक्त किए गए है। यह संदर्भ ''रक्षा करनेवाले स्वर्गदूतों'' के विचार की पुष्टि करता है।

४. विषय #३: दुष्टात्माएँ।

क. मत्ती १६:१८ - शैतान रक्षात्मक है। यह नरक के फाटक हैं (फाटक रक्षात्मक उद्देश के लिए हैं, साथ ही साथ नगर के नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं) जो हम पर कभी प्रबल न होंगे।

ख. लूका २२:३१, ३२ - शैतान को आदर के साथ परमेश्वर की अनुमति लेनी होती है कि वह परमेश्वर के लोगों के जीवन में क्या कर सकता है।

ग. मत्ती ८:२९ और लूका ४:३४ – दुष्टात्माएँ यीशु की उपस्थिति को जानती हैं। वे जानती हैं कि वह कौन है और थरथराती हैं।

घ. मरकुस ५:६, ७ और १:२४ - दुष्टात्माएँ हमेशा यीशु को पहचानती हैं और उसके अधीन रहती हैं। उनके पास कोई चुनाव नहीं है।

ङ. मरकुस ९:२५ . यीशु ने दुष्टात्मा को बाहर निकलने और फिर कभी प्रवेश न करने की आज्ञा दी।

च. लूका ८:३१ - दुष्टात्माओं को ''अधोलोक'' में जाने की आज्ञा दी जा सकती है।

छ. मत्ती १७:२०, २१ और लूका ९:४१ – विश्वास की कमी और प्रार्थना और उपवास की कमी का परिणाम दुष्टात्माओं को निकालने में असमर्थता हो सकती है।

टिप्पणियाँ —

ज. मत्ती १२:४३-४५ - दुष्टात्माएँ घुमती और सुखी जगहों में विश्राम ढूंढती है। यदि एक व्यक्ति जिसके अन्दर से दुष्टात्मा निकली हो अपने आप को यीशु से नहीं भरता, तो दुष्टात्मा वापस अपने उसी घर में लौट आएगी।

झ. लूका ११:२४-२६ - दुष्टात्माएँ निकलने के बाद वापस आ सकती है। साथ ही वे अन्य दुष्टात्माओं को भी अपने साथ ला सकती हैं।

ञ. लूका १०:१८ - जब एक दुष्टात्मा को निकाला जाता है तो यह ऐसा होता है मानो शैतान को उसके सिंहासन से हटा (वह गिराया) दिया गया हो।

५. विषय #४: आत्मिक युद्ध।

क. हमारे स्वयं के शरीर के विरूद्ध युद्ध।

१) मत्ती ११:१२ - परमेश्वर का राज्य बलपूर्वक आगे बढ़ता है क्योंकि उसका एक प्रबल विरोधी है, और बलवंत लोग इसमें बलपूर्वक प्रवेश करते हैं क्योंकि उनका एक विरोधी है (विशेषरूप से उनका अपना शरीर)। १कुरि. ९:२७ के निहितार्थो पर विचार करें।

२) मत्ती २६:४१ और मरकुस १४:३८ - आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। अपने आप को शरीर से बचाने और परीक्षा में पड़ने से बचने के लिए, यह आवश्यक है कि हम सचेत रहें और प्रार्थना करते रहें।

ख. युद्ध मसीही जीवन का भाग है (देखें मरकुस १६:१७, १८)। कुछ विशेष चिन्ह् विश्वासियों के साथ होंगे। इनमें से एक चिन्ह् दुष्टात्माएँ निकालना है।

ग. शैतान के विरूद्ध युद्ध।

१) लूका ११:२२ - छुटकारे की सेवकाई में चार चरण हैं।

क) शत्रु पर आक्रमण।

ख) शत्रु पर अधिकार।

ग) शत्रु के हथियार ले लेना।

घ) लूट को बांटना।

टिप्पणियाँ

२) मरकुस ३:२७ - शत्रु पर अधिकार लेना और उसके हथियार छीन लेना, वह बांधा जाना चाहिए।

३) मरकुस ९:२५ - यीशु ने दुष्टात्माओं को बाहर निकलने और फिर प्रवेश न करने की आज्ञा दी।

घ. विश्वासी के हथियार।

१) लूका ४:३६ - एक दुष्टात्मा को निकालने के लिए दो चीजों की आवश्यकता है।

क) अधिकार।

ख) सामर्थ्य।

२) लूका ४:४-८, १२ - यीशु ने शैतान और उसकी अभिलाषाओं से लड़ने के लिए परमेश्वर के वचन का प्रयोग किया।

ङ. शैतान के हथियार।

१) लूका २२:३ - शैतान लोगों में प्रवेश कर सकता है।

२) लूका २०:२० - शैतान आपको फंसाने के लिए जासूस भेजेगा। वे आपका विश्वास जीतने के लिए धर्म के काम करेंगे। धोखा शत्रु के द्वारा अधिकांश रूप से प्रयोग किए जाना वाला हथियार है।

३) यूहन्ना ८:४४ - शैतान का स्वभाव झूठ बोलना है। वह झूठ को प्रभावशाली हथियार के रूप में इस्तेमाल करता है।

४) मत्ती १६:२३ - शैतान के सबसे बड़े हथियारों में से एक हमारे ध्यान को सांसारिक मिरास की और लगाने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह हमें दुःखों और कठिनाईयों का इंकार करने के लिए उत्साहित करता है, जो हमें मसीह से दूर कर सकता है। आरामदायक जीवन का प्रसतव हमेशा से ही शैतान द्वारा सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाले हथियारों में से एक रहा है।

५) मरकुस ८:३१-३३ - हमें परमेश्वर के मार्ग (जो की क्रूस है) से दूर रखने के लिए शैतान संसार की सुख-सुविधा और सफलता से हमें परीक्षा में डालने का प्रयास करता है।

टिप्पणियाँ —

III. मानवता।

क) विषयवस्तु #१: धर्म।

१. विषय #१: धार्मिकतावाद।

क. मत्ती २३:२४ और लूका ११:४२-४४ - एक ''साँचा'' बिना भराई के खाली कब्र है। यह मरा हुआ है। बिना आंतरिक सामग्री के धर्म का बाहरी रूप धर्मवाद है। यह एक मरी हुई धार्मिक क्रिया है।

१) हालाँकि, हमें सभी बाहरी धार्मिक गतिविधियों को अनदेखा नहीं करना चाहिए (उदाहरण के लिए दशमांश)।

२) हमें उन्हें उचित और वास्तविक समग्री से भरने की आवश्यकता है। (उदाहरण के लिए दया और न्याय)।

३) सच्चे धर्म में बाहरी रूपों से साथ आंतरिक सामग्री शामिल होती है। धर्मवाद केवल बाहरी रूप से साथ संतुष्टि है।

ख. लूका ५:३९ - यह सिद्धांत अक्सर धार्मिकतावाद और अप्रासंगिक कलीसियाओं की ओर ले जाता है। अर्थात्, आत्मा के नए बहाव में चलने में असमर्थता। अप्रासंगिक कलीसियाएँ अक्सर वे होती हैं जो प्रासंगिक होने के लिए परमेश्वर की अगुवाई पर निर्भर करती हैं।

ग. लूका ११:४६, ५२ - पाखंडी अगुवे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करते। साथ ही वे दूसरों को भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोकते हैं।

घ. लूका १२:१ - धर्मिकतावाद पाखंड उत्पादित करता है। पाखंड एक खमीर है। इस प्रकार, धार्मिकतवाद बढ़ता है।

ङ. मत्ती १६:११ - खाली धार्मिक शिक्षाएँ खमीर के समान है (ये फैलती हैं)। यीशु ने हमें इनसे सावधान रहने की चेतावनी दी है।

टिप्पणियाँ

२. विषय #२: पाखंड।

क. पाखंड के प्रकार।

१) मत्ती २३:२५, २६ – आप बाहरी स्वरूप बदल सकते हैं और अभी भी भीतर से दूषित हो सकते हैं, लेकिन यदि आप भीतर के प्रदूषण को साफ करते हैं तो यह बाहरी स्वरूप को भी बदल देगा।

२) मत्ती ६:१, ८ - परमेश्वर के साथ अपने संबंध का दिखावा करन पाखंड का सूचक है। प्रार्थना में अर्थहीन दोहराव भी पाखंड की निशानी है।

३) मत्ती ७:५ - पाखंड अक्सर दूसरों का न्याय करने से जुड़ा होता है। दूसरों का न्याय करना पाखंड का ही एक प्रकार है।

ख. पाखंड के परिणाम।

१) लूका १२:१ – पाखंड फैलता है।

२) मत्ती २३:१३ और लूका ११:५२ – पाखंड लोगों को परमेश्वर के राज्य से बाहर रखता है।

३) मत्ती १५:८, ९ - पाखंडी आराधना किसी काम की नहीं। आज्ञाकारिता के बिना आराधना व्यर्थ है। इस प्रकार, पाखंड का परिणाम व्यर्थता है।

४) मरकुस १२:४० - पाखंडियों के प्रति यीशु की प्रतिक्रिया, रवैया और शब्द इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उनका न्याय, न्याय के उच्च मापदंड के द्वारा किया जाएगा। इस प्रकार, पाखंड का परिणाम न्याय है।

टिप्पणियाँ —

ग. पाखंड को उजागर करना।

१) वास्तविकता की ओर संकेत करना (ऊपरीपन के विपरीत) पाखंड को उजागर करता है।

क) मत्ती ५.७ - पहाड़ी उपदेश, (मत्ती में यीशु का पहला उपदेश) परमेश्वर की बुद्धि है जो मनुष्य की मूर्खता का प्रत्युत्तर दे रही है। यह पापी मनुष्यों की पाखंडी प्रवृत्ति को जानने वाला परमेश्वर है जो पाखंड का प्रत्युत्तर दे रहा और उसे उजागर कर रहा है। पहाड़ी उपदेश सच्ची व्यवस्था को प्रगट करने के द्वारा धार्मिक लोगों की त्रुटि को व्यर्थ ठहराता है। सच्ची व्यवस्था चीजों के केंद्र में जाती है। परमेश्वर वास्तवितकता परमेश्वर हैं छिछलेपन का नहीं।

ख) मत्ती १२:७ - व्यवस्था की परिपूर्णता उसके बलिदान में नहीं बल्कि उसकी करूणा में पाई जाती है। करूणा व्यवस्था का केंद्र है। करूणा वास्तविकता की ओर संकेत करती है। बलिदान अक्सर बहुत सहती हो सकते हैं।

ग) मत्ती ७:१२ - व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता वास्तविकता पर आधारित हैं, पाखंड पर नहीं। वास्तविकता यह है कि आप दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि दूसरे आपके साथ करें। इससे अलावा कुछ और पाखंड है।

घ) मत्ती १५:११,१८ - स्वयं को अशुद्ध करना, जो कहा गया, सोचा गया, और किया गया (वास्तविकता) का परिणाम है। यह उसका परिणाम नहीं है जो खाया (सतही) जाता है। इसका लेना-देना उस से है जो हृदय से निकलता है।

२) पाखंड को उजागर करने के तरीके।

क) लूका १६:१५ - जब बात पाखंड की आती है तो यीश बहुत स्पष्ट थे और पाप का समना करने में संकोच नहीं किया।

ख) लूका २०:१.८ - यीशु ने पाखंडियों को अनुमति नहीं दी कि वे परिस्थिति या वार्तालाप पर नियंत्रण लें। उन्होंने नियत्रंण रखने और उनके पाखंड को उजागर करने के लिए अलौकिक बुद्धि का प्रयोग किया।

टिप्पणियाँ –

ग) लूका ११:४५ - जब आप सच बोलते हैं तो अक्सर आप पाखंड को उजागर करेंगें। यह पाखंड़ियों का अपमान और उन्हें परेशान करेगा। सच बोलें और सच को न्याय करने दें।

घ) लूका १२:२ - पाखंडी लो दूसरों को मूर्ख बना सकते हैं लेकिन उनकी मूढता अंत में उजागर हो जाएगी। सबकुछ प्रगट किया जाएग, जो वास्तव में है वह अंत में भी होगा। इस प्रकार, परमेश्वर का ''अंतिम न्याय'' धर्मी लोगों के लिए शांति आराम लाता है जो कई बार हबक्कूक से समान महसूस करते हैं (देखें हबक्कूक १:१.४, १२-१४)।

घ. पाखंड से बचाव।

१) मत्ती २३:२४ - एक ''साँचा'' बिना भराई के खाली कब्र है। यह मरा हुआ है। बिना आंतरिक सामग्री के धर्म का बाहरी रूप धर्मवाद है। यह एक मरी हुई धार्मिक क्रिया है।

क) हालाँकि, हमें सभी बाहरी धार्मिक गतिविधियों को अनदेखा नहीं करना चाहिए (उदाहरण के लिए दशमांश)।

ख) हमें उन्हें उचित और वास्तविक समग्री से भरने की आवश्यकता है (उदाहरण के लिए दया और न्याय)।

ग) सच्चे धर्म में बाहरी रूपों से साथ आंतरिक सामग्री शामिल होती है। धर्मवाद केवल बाहरी रूप से साथ संतुष्टि है।

घ) इस प्रकार, पाखंड से बचाव के लिए अपने बाहरी रूपों का मूल्यांकन करना अचित है, जरूरी नहीं कि उन्हें बाहर फेंक दिया जाए। क्या आपके तरीकों में वास्तविक आंतरिक सामग्री शामिल है या फिर वे केवल एक दिखावा है? सुनिश्चित करें कि आप उन्हें वास्तविक सामग्री से भर दें।

२) मत्ती ५:३७ . पाखंड का सबसे बड़ा इलाज खराई है। खराई का अभ्यास करें और इसे संभालकर रखें और आप पाखंड से बचे रहेंगे। पाखंड की शुरूआत तब होती है जब आप अपनी ''हाँ'' को ''हाँ'' से कम या अपनी ''न'' को ''न'' से कुछ अधिक होने देते हैं।

टिप्पणियाँ —

३. विषय #३: मरियम आराधना पद्धति।

क. लूका ११:२७, २८ - यीशु अपनी सांसारिक माता को विशेष महत्व, विशेषाधिकार, या महिमा देने के किसी भी प्रयास को नकारते और अस्वीकार करते हैं।

1) उसके प्रति पक्षपात दिखाने के बजाय, वह उनकी ओर किसी और जिम्मेदारी के प्रति आज्ञाकारी होने के समान ही संकेत करते हैं।

2) हम इस प्रकार के विचार को मरकुस ३:३२-३५ में देखते हैं।

ख. लूका १:४५-४८ - मरियम अपने विश्वास (पद ४५) और नम्रता (पद ४८) के कारण आशीषित हुई। इसमें ऐसा कुछ भी विशेष नहीं कि अन्य लोग उसकी उपासना करें। अन्य सभी विश्वासियों के पास भी आशीषित होने का समान अवसर है (देखें ५:३-१२)।.

1) वास्तव में इस खंड का प्रयोग मरियम आराधना पद्धति को अस्वीकार करने के लिए किया जाना चाहिए।

2) ध्यान दें, मरियम को अपनी स्वयं की घोषणा के अनुसार, उद्धारकर्ता की आवश्यकता है। यदि यह सत्य है तो वह कैसे पापरहित हो सकती थी (जो मरियम आराधना पद्धति का मुख्य दावा है)?

ख) विषयवस्तु #२: ठोकर। (यीशु की स्वीकार करने में कठिन शिक्षाएँ)।

१. विषय #१: ठोकर के प्रकार।

क. यीशु ठोकर है।

१) यूहन्ना १८:१०, ११ - क्रूस मनुष्यों के लिए ठोकर का कारण है क्योंकि हमारे लिए इस तथ्य को स्वीकार करना कठिन है कि परमेश्वर को स्वयं हमारे पापों के लिए मरना पड़ा। अंत तक पतरस इस बात से ठोकर खाता रहा।

२) यूहन्ना ७:७ - यीशु की वापसी ठोकर खाने का कारण है। संसार यीशु से बैर रखता है क्योंकि लोगों को यह सुनना पसंद नहीं कि वे बुरे हैं। यीशु की वापसी सीधे इस वास्तविकता की ओर संकेत करती है। यह इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि मनुष्य बुरा है और उसे उद्धाकर्ता की अति आवश्यकता है। मनुष्य इस सत्य से ठोकर खाते हैं।

टिप्पणियाँ

३) मत्ती ११:६ - यीशु लोगों के लिए ठोकर का कारण है क्योंकि मनुष्यजाति का पापमय स्वभाव स्वभाविक रूप से मसीह के सिद्ध जीवन से ठोकर खाता है। हालांकि, धन्य है वह जो इससे ठोकर न खाए।

४) लूका ८:३५-३७ - जो लोग यीशु को नहीं जानते उनके लिए, परमेश्वर की सामर्थ्य भयानक हो सकती है। यह इतनी भयानक हो सकती है कि वे इसका कोई भाग नहीं चाहते। वास्तव में यह एक ठोकर का कारण बन सकता है।

ख. ठोकर का केवल एक ही कारण होना चाहिए।

१) मत्ती १७:२६, २७ - केवल यीशु ठोकर का एकमात्र कारण होना चाहिए। जब हम सुसमाचार प्रस्तुत करते हैं तो हमें ठोकर के कुछ अन्य कारणों से बचना चाहिए (गलतफहमी, सांस्कृतिक असंवेदनशीलता, धार्मिक आवश्यकताएँ, आदि)। केवल एकमात्र यीशु होना चाहिए। इस तरीके से, जो व्यक्ति संदेश को स्वीकार करता है वह यीशु को ग्रहण करने या अस्वीकार करने के लिए बाध्य होता है (और आपकी सांस्कृति असंवेदनशीलता या धार्मिक आवश्यकताओं को नहीं)।

२) उदाहरण के लिए, हमें कोशिश करनी चाहिए कि कोई यीशु को छोड़ और किसी चीज से ठोकर न खाए। यदि यीशु उन्हें ठोकर खिलाता है, तो लहू उनके ही हाथों पर होगा। इस खंड में हम देख सकते हैं कि यीशु स्वयं कैसे दूसरों को ठोकर खिलाने से बचते हैं। वह इस संसार की मामूली बातों को बड़ा मुद्दा नहीं बनाते। इस प्रकार मुख्य मुद्दे (उसके स्वामित्व) पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

ग. दुर्भाग्य से अन्य प्राकर के ठोकर के कारण हैं।

१) ठोकर के अन्य कारण अपरिहार्य हैं।

क) मत्ती १८:७ - कुछ अन्य प्रकार के ठोकर के कारण है जो लोगों को यीशु से दूर रखते हैं। यीशु कहते हैं कि वे अपरिहार्य हैं।

ख) मत्ती १८:८, ९ - हमें इन ठोकरों के कारणों के विरूद्ध जुझारू होना चाहिए। जो कुछ भी परमेश्वर की ओर आपके मार्ग को बाधित करता है वह नाश किया जाना चाहिए। मसीह और परमेश्वर के निकट जाने के लिए जो कुछ भी करना पड़े वह करें।

टिप्पणियाँ –

२) ठोकर के अन्य कारणों के उदाहरण।

क) यूहन्ना १३:८ - हम अपनी स्वयं की धार्मिकता को ठोकर का कारण होने की अनुमति दे सकते हैं। स्वयं की धार्मिकता परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता का इंकार करती है। पतरस ने इस कारण से ठोकर खाई।

ख) मत्ती ८:३१-३३ - हमें परमेश्वर के मार्ग (जो की क्रूस है) से दूर रखने के लिए शैतान संसार की सुख-सुविधा और सफलता से हमें परीक्षा में डालने का प्रयास करेगा। आरामदाय जीवन का यह प्रलोभन ठोकर का एक सामान्य कारण है।

ग) मत्ती २०:३१ - संसार यह नहीं सुनना चाहता कि लोग यीशु को पुकारें। वे आपको खामोश करने का प्रयास करेंगे। यदि हम यीशु के बजाय मनुष्यों पर ध्यान लगाएंगे तो यह एक ठोकर का करण हो सकता है। हमें लगातार यीशु को पुकारते रहना चाहिए, इससे फर्क नहीं पड़ता कि संसार क्या कहता है।

घ) मत्ती २३:१३ - पाखंडी अगुवे ठोकर का एक कारण हो सकते हैं।

ङ) लूका ६:३९ - एक अन्धा अगुवा अपने साथ अन्य लोगों के भी ठोकर खिलाता है।

च) मत्ती १८:५, ६ और मरकुस ९:४२ - जो लोग किसी ''छोटे'' (नए विश्वासियों) को भी ठोकर खिलाते हैं वे भारी कीमत चुकाएंगे।

२. विषय #२: मनुष्य को प्रसन्न करना और परमेश्वर को प्रसन्न करना।

क. मरकुस ११:२९-३२ - मनुष्यों को प्रसन्न करने की इच्छा और प्रलोभन ठोकर के सबसे बड़े कारणों में से एक है। जो व्यक्ति केवल मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता है वह हमेशा ठोकर खाते हुए पाया जाएगा।

ख. लूका १२:४-७ - हमें मनुष्यों से नहीं डरना चाहिए। हमें उस ''चट्टान'' का भय मानना चाहिए जो हमारे ऊपर प्रभुत्व रखता है। अन्य लोग हमारे ऊपर प्रभुत्व नहीं रखते। जब तब हम उसे प्रसन्न करते रहेंगे जो हम पर प्रभुत्व रखता है, तब तक हमें इस बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है जो हम पर प्रभुत्व नहीं रखते वे हमसे प्रसन्न हैं या नहीं।

ग. यूहन्ना ५:४४ - दूसरों से अपनी प्रशंसा की अपेक्षा का परिणाम विश्वास करने में अयोग्यता हो सकता है।

टिप्पणियाँ

ग) विषयवस्तु #३: मानवीय समस्याएँ।

१. विषय #१: डर।

क. मत्ती १०:२६ - सब बातें प्रगट की जाएंगी। कुछ भी छिपा न रहेगा। इस समझ का प्रयोग लोगों के डर और उनकी सामर्थ्य और प्रभाव से बचने की औषधि के रूप में किया जा सकता है।

ख. मत्ती १०:२८ - परमेश्वर और आपके जीवन पर उसके प्रभुत्व पर ध्यान केंद्रित करना भी डर से एक बचाव हो सकता है।

ग. मत्ती १०:२९-३१ - परमेश्वर सम्पूर्ण नियत्रंण में है। वह प्रत्येक बात पर नियंत्रण और ध्यान रखता है। हम किससे डरें?

२. विषय #२: चिंता।

क. लूका १२:२६, ३१ - हमें परमेश्वर के प्रभुत्व का प्रत्युत्तर उसके राज्य को खोजने के द्वारा देना चाहिए। हम उन बातों की चिंता करते हैं जिन्हें हम नियंत्रित नहीं कर सकते। चिंता करने के बजाए, हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर संप्रभु है। यह हमें उन बातों को नियंत्रित करने के लिए स्वतंत्र करेगा जो हम कर सकते है (जिनके लिए हम जबावदार हैं)। यह परमेश्वर के राज्य की खोज करना है।

ख. मत्ती ६:२७ - चिंता आपके जीवन में समय को नहीं जोड़ सकती। तो फिर चिंता क्यों?

ग. यूहन्ना ७:३० - हम परमेश्वर की इच्छा के बिना सताए नहीं जा सकते। यदि यह परमेश्वर की इच्छा है तो हमारे लिए यह सर्वश्रेष्ठ बात है। इस प्रकार, इमें चिंता नहीं करनी चाहिए (साथ ही देखें ८:२०)। परमेश्वर नियत्रंण में है।

घ. लूका १२:१६-२१ - भविष्य की चिंता करना पैसा बचाने का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। निहितार्थ यह है कि पैसा चिंता का इलाज नहीं कर सकता।

ङ. लूका २१:३४-३६ - हमें इस संसार की चिंताओं से परेशान होने से बचना चाहिए वरना अंत एक फंदे के समान आ सकता है। हमें सचेत रहना चाहिए। हमें हमेशा प्रार्थना में लगे रहना चाहिए ताकि हम मज़बूत और मसीह के आगमन के लिए तैयार रहें। प्रर्थान चिंता का स्थान लेती है (देखें फिलि. ४:६)।

टिप्पणियाँ —

३ . विषय #३: निराशा।

क. लूका २१:३४-३६ - हमें इस संसार की चिंताओं से परेशान होने से बचना चाहिए वरना अंत एक फंदे के समान आ सकता है। हमें सचेत रहना चाहिए। हमें हमेशा प्रार्थना में लगे रहना चाहिए ताकि हम मज़बूत और मसीह के आगमन के लिए तैयार रहें। प्रर्थान चिंता का स्थान लेती है (देखें फिलि. ४:६)।

ख. लूका १८:७, ८ - नियमित प्रार्थना न्याय की ओर ले जाएगी। परमेश्वर नियमित प्रार्थना का उत्तर देता है, तो इसलिए जब अन्याय जितता हुआ दिखाई दे तो हार न मानें। निराश न हों।

घ) विषयवस्तु #४: मानवीय संबंध।

१. विषय #१: विवाह।

क. स्वर्ग में विवाह नहीं है (देखें मत्ती २२:३०)। स्वर्ग में विवाह अस्तित्व में नहीं है।

ख. अकेलापन (देखें मत्ती १९:१२)। अकेले बने रहना परमेश्वर द्वारा प्रदत्त वरदान है। इसे किसी ऐसे पर नहीं थोपा जाना चाहिए जिसके पास यह वरदान न हो।

ग. विवाह क्या है (देखें मत्ती १९:६)? विवाह का प्रतिनिधित्व एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहता है। परिणाम यह है कि परमेश्वर उन्हें एक साथ जोड़ता है और स्त्री और पुरूष एक हो जाते हैं।

घ. तलाक क्या है (देखें मत्ती १९:६)? विवाह का प्रतिनिधित्व एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया है जो अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहता है। परिणाम यह है कि परमेश्वर उन्हें एक साथ जोड़ता है और स्त्री और पुरूष एक हो जाते हैं। तलाक अलग होना और उसे नाश करना है जो परमेश्वर ने किया है।

टिप्पणियाँ

ङ. तलाक की शुरूआत कैसे हुई?

१) मत्ती १९:८ - बाइबल में हम ऐसे निर्देश पा सकते हैं जो मनुष्य को परमेश्वर के द्वारा दिए गए थे लेकिन उसकी इच्छा और मूल इरादों से युक्त नहीं थे। मनुष्य के पाप के कारण उनकी अनुमति या इज़ाज़त दी गई।

२) मरकुस १०:५.८ - तलाक स्वभाविक नहीं है। यह केवल मनुष्य के पाप और कठोर हृदय के कारण अस्तित्व में है। यह इस मायने में विद्रोह है क्योंकि यह परमेश्वर की योजना के विरूद्ध जाता है।

च. तलाक, पुनर्विवाह, और व्यभिचार।

लेखक की टिप्पणीः

तलाक और पुनर्विवाह का मुद्दा जटिल है। ऐसे बहुत से मुद्दे हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए। तलाक और पुनर्विवाह का अध्ययन करते समय विचार किए जाने वाले सभी सिद्धांतों को विकसित करना इस पाठ्यक्रम के दायरे से बाहर है। इस बात को ध्यान में रखें कि नीचे सूचीबद्ध टिप्पणियाँ विशिष्ट पदों को संबोधित करती हैं और पूरे विषय से संबंधित निष्कर्ष निकालने का प्रयास नहीं करती।

१) मत्ती १९:९ - तलाक (अपने साथी के प्रति विश्वासयोग्य न रहने के मामले को छोड़ कर) और पुनर्विवाह (जब तक बाइबल के आधार पर उचित न हो) व्याभिचार के समान जान पड़ते हैं। हम निम्नलिखित समीकरण को एक सिद्धांत के रूप में संदर्भित कर सकते हैंः

तलाक — अपने जीवन साथी के प्रति विश्वासयोग्य न रहना + पुनर्विवाह = व्यभिचार।

२) लूका १६:१८ - तलाकशुदा व्यक्ति का पुनर्विवाह व्याभिचार माना जाता है यदि उसका तलाक बाइबल के औचित्य से नहीं था। इसी प्रकार, तलाकशुदा व्यक्ति से पुनर्विवाह करना (जिसका तलाक बाइबल के आधार पर उचित नहीं था) भी व्याभिचार माना जाता है।

टिप्पणियाँ —

३) मरकुस १०:११, १२ - एक निश्चित अर्थ में तलाक परमेश्वर के द्वारा मान्य नहीं है। यदि आप बाइबल के आधार के बिना तलाक या पुनर्विवाह करते हैं तो आप व्याभिचार करते हैं। निहितार्थ यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में आप अभी भी विवाहित हैं (ध्यान दें: तलाक और पुनर्विवाह का अध्ययन बहुत जटिल है। पवित्रशास्त्र के अन्य उपयुक्त बिंदुओं के साथ इन सिद्धांतों का अध्ययन करना चाहिए)।

२. विषय #२: पड़ोसी।

क. लूका १०:२९-३७ - हम अक्सर इस परिभाषा को सीमित करने के द्वारा अपने आप को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं कि हमारा पड़ोसी कौन है।

ख. हालाँकि, यीशु हमें एक स्पष्ट परिभाषा प्रदान करते हैं जिसकी बहुत व्यापक सीमाएँ हैं। हमारा पड़ोसी वह है जिसे दया की ज़रूरत है। हम किसके पड़ोसी होने के लिए तैयार हैं?

IV. यह जीवन।

क. विषयवस्तु #१: सफलता।

१. विषय #१: सफलता।

क. सफलता क्या नहीं है (देखें लूका ६:२४-२६)। संसार का सुख-सुविधा और विलासिता सच्ची सफलता नहीं है। वास्तव में सफल मसीही जीवन का परिणाम आराम और विलासिता नहीं होगा।

ख. सफलता क्या है (देखें यूहन्ना ७:१८)? सामान्य रूप से, सफल जीवन की कुंजी परमेश्वर की महिमा को खोजना है अपनी स्वयं की नहीं। इस प्रकार, सफलता परमेश्वर की महिमा करना है।

ग. सफलता कहा पाई जा सकती है (देखें यूहन्ना १५:५)? सफलता केवल यीशु में पाई जाती है।

टिप्पणियाँ –

घ. सेवकाई में सफलता।

१) यूहन्ना ३:२७ - मनुष्य पूर्ण रूप से परमेश्वर के प्रभुत्व पर निर्भर है। अनंतः, सेवकाई में सफलता परमेश्वर पर निर्भर करती है क्योंकि मनुष्य तब तक प्राप्त नहीं कर सकता (जो कि उसकी जिम्मेदारी है) जब तक कि उसे पहले दिया न जाए (परमेश्वर की जिम्मेदारी)।

२) यूहन्ना ५:१९ – यीशु की सफलता की कुंजी यह थी कि उसने वह देखा जो पिता कर रहा था।

३) यूहन्ना ७:१६ - सफल शिक्षा की सेवकाई की कुंजी यह है कि यह आपकी शिक्षा नहीं है बल्कि परमेश्वर की शिक्षा है।

४) यूहन्ना १७:२३ - सुसमाचार प्रचार में सफलता एकता पर निर्भर करती है।

२. विषय #२: महानता।

क. मत्ती १८:४ - जो कोई अपने आप को बालक के समान छोटा करता है वह स्वर्ग के राज्य बड़ा है। एक बालक दीन होता है और पूर्णरूप से अपने माता पिता पर निर्भर रहता है, वह मासूमियत के साथ उन पर भरोसा रखता है, वह स्वभाविक रूप से उनके स्नेह की लालसा करता है और वह उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहता है।

ख. लूका २२:२६, २७ - यीशु ने एक "नया" सिद्धांत स्थापित किया। सबसे बड़ा सेवक है।

ग. मत्ती २०:२५-२७ और मरकुस ९:३५ - परमेश्वर के राज्य में महानता अपने अधिकार का इस्तेमाल करने के बराबर नहीं है। यह अपने आप को दूसरों पर ''बोझ डालने'' के द्वारा प्रगट नहीं करती।

१) परमेश्वर के राज्य में महानता दास होने के बारबर है (देखें मत्ती २३:११)। यह अपने आप को दूसरों की सेवा करने के द्वारा प्रगट करती है।

२) वास्तव में जो अपने आप को आगे करेगा वह सब के पीछे होगा (सब का दास)।

घ. मरकुस १०:४५ - परमेश्वर के राज्य में बड़ा बनने के लिए आपको सेवा करनी होगी। सेवा में अपने आप को दूसरों की फिरौती में देने के लिए तैयार होना शामिल है। इसमें अपने जीवन को दूसरों के लिए देने के लिए तैयार रहना शामिल है।

ङ. मत्ती १९:३० - जो पहले हैं वे पिछले और जो पिछले हैं वे पहले होंगे।

टिप्पणियाँ —

च. मरकुस १०:२८.३१ - पहले पिछले और पिछले पहने होने की अवधारणा यीशु के लिए सब कुछ पीछे छोड़ने के सदंर्भ में निहित है।

१) इस संसार में सब कुछ पीछे छोड़ने का परिणाम इस संसार में अंतिम होना है। हालाँकि, तब आप परमेश्वर के राज्य में प्रथम होंगे।

२) जो सब कुछ पकड़े रहने का प्रयास करते हैं वे जीवन में आगे होगें, लेकिन आने वाले युग में अंतिम होंगे।

३. विषय #३: क्या महत्वपूर्ण है?

क. मत्ती १६:२६ और मरकुस ८:३६, ३७ - अनंत काल के महत्व को बाकी कि सब चीज़ों को अपेक्षकृत महत्वहीन बना देना चाहिए। परमेश्वर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता इस सत्य के प्रति हमारी समझ पर निर्भर करती है। यह इस पर निर्भर करता है कि हम इस पर कितना विश्वास करते हैं।

१) परमेश्वर के प्रति आपकी प्रतिबद्धता की मात्रा और गुणवत्ता आपके विश्वास की मात्रा और गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

२) संसार के प्रति आपकी प्रतिबद्धता की मात्रा आपके संदेह की मात्रा पर निर्भर करती है।

३) यदि हमें कोई संदेह नहीं है, तो हम तार्किक रूप से वह सब कुछ देंगे जो हमें अनंत जीवन के लक्ष्य की और ले जाता है। हम यह जानकर ''अपना सब कुछ देंगे'' कि गलत होने का कोई जोखिम नहीं है (यह जानकर कि अंत में हम देखेंगे कि जो विश्वास किया गया था वह वास्तव में सत्य था)।

४) विश्वास करने वाले लोग प्रतिबद्ध होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि हारने का कोई जोखिम नहीं है। निराश होने या अपने विश्वास के जीवन पर पछतावा करने का कोई जोखिम नहीं है। संदेह, खेद के डर की ओर ले जाता है। खेद का डर हमें इस संसार में संतुष्टि और आराम पाने के प्रयास को प्राथमिकता देने की ओर प्रोत्साहित करता है, वह सोचता है कि कहीं मरने पर यह न लगे कि हमारा विश्वास सत्य नहीं था।

५) इस प्रकार अनंत जीवन के महत्व में विश्वास की कमी का परिणाम परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्धता में कमी होगा।

टिप्पणियाँ –

ख. मत्ती १९:१७, २१ - यीशु का अनुसरण करना सबसे महत्वपूर्ण है (ध्यान दें कि यूहन्ना १७:३ के अनुसार अनंत जीवन यीशु को जानना है)।

१) लोग हमेशा स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए पर्याप्त ''भले'' होने के तरीकों की तलाश में रहते हैं।

२) हालाँकि, जबकि एक ही है जो भला है तो जो एकमात्र ''भला'' काम जो हम कर सकते हैं वह है अपने आप का इंकार करना और यीशु का अनुसरण करना। भलाई करना यीशु का अनुसरण करना है क्योंकि यीशु भला है।

३) इस खंड में यीशु ने इस बात का इंकार नहीं किया कि वही वह एकलौता व्यक्ति है जो भला है; वरन वह अविश्वासियों को डाँटने के लिए कटाक्ष का प्रयोग करने के द्वारा वास्तव में इस बात की घोषणा करता है कि वही वह एक मात्र व्यक्ति है।

ग. मत्ती १८:८, ९ - हमें किसी भी उस चीज के प्रति ''आक्रामक'' होना चाहिए जो परमेश्वर की ओर हमारे मार्ग को अवरूद्ध करती है। यदि हम सबसे महत्वपूर्ण चीज का अनुसरण करना चाहते हैं, तो हमें वह सब कुछ करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो हमें मसीह में आगे और परमेश्वर के निकट ले जाता है।

घ. मत्ती २१:२८-३१ – किस तरह से आप समाप्त करते हैं वह उसकी तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है, कि किस प्रकार आप शुरू करते हैं।

१) पुराने नियम के शाऊल और नए नियम के शाऊल के जीवन में अंतर पर विचार करें।

२) आपके काम, आपकी बातों से अधिक मायने रखते हैं।

ङ. लूका ३:८, १० पश्चाताप के बाद फल होता है (या जीवन)। जिस पश्चाताप से जीवन या फल नहीं मिलता वह नष्ट हो जाता है। इसके कोई मायने नहीं!

टिप्पणियाँ —

ख. विषयवस्तु #२: गुण।

१. विषय #१: परमेश्वर का भय।

क. मत्ती १०:२८ - यह परमेश्वर है जिससे डरना चाहिए।

ख. लूका १२:४, ५ - परमेश्वर का भय उसकी महानता और संप्रभुता पर आधारित होना चाहिए।

ग. यूहन्ना ९:३१ - परमेश्वर के भय और आज्ञाकारिता का परिणाम यह होता है कि वह हमारी सुनता है।

२. विषय #२: नम्रता।

क. नम्रता की कमी।

१) यूहन्ना ९:४१ – पाप आपकी आवश्यकता की पहचान की कमी के साथ बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। आर्थात, यह ''टूटने'' और नम्रता की कमी के साथ जुड़ा है।

२) मत्ती २३:१२, लूका १४:११, और १८:१४ – यदि आप अपने आप को ऊँचा करेंगे तो परमेश्वर आपको नीचा करेगा। यदि आप अपने आप को नीचा करेंगे तो परमेश्वर आपको ऊँचा करेगा।

ख. ऊपर का रास्ता (सफलता के लिए)।

१) मत्ती २३:१२ – ऊपर का रास्ता (सफलता के लिए) नीचे है। यह संसार की प्रणाली के उलट है। परमेश्वर के राज्य में सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि आप अपने आप को नीचा करें। संसार के संगठनों मे सफलता प्राप्त करने के लिए अपने तरीकों से लड़ना आवश्यक है।

२) मत्ती १८:४ – जो कोई अपने आप को बालक के समान छोटा करता है वह परमेश्वर के राज्य में बड़ा है। एक बालक इतना दीन होता है कि वह पूरी तरह अपने माता पिता पर निर्भर होता है, वह मासूमियत के साथ उन पर भरोसा करता है, वह स्वभाविक रूप से उनके स्नेह की लालसा करता है, और वह उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार है। बड़ा होने के लिए आपको नम्र होना होगा। इसलिए ऊपर का रास्ता नीचे है।

टिप्पणियाँ –

ग. सेवकाई में नम्रता।

१) यूहन्ना ३:३० – यीशु के बढ़ने के लिए, हमें घटना होगा। हमारी सेवकाई के सफल होने के लिए, (''सेवकाई में सफलता'' और ''सफलता क्या है?'' पर अनुभागों की समीक्षा) यीशु का बढ़ना आवश्यक है। इस प्रकार सेवकाई में नम्रता आवश्यक है।

२) लूका ६:४२ – दूसरों की सेवा करने के लिए नम्रता की आवश्यता है। दूसरों की गलतियों को सुधारने में उनकी सहायता करने के लिए, आपको पहले अपनी गतियों पर विचार करने और उन्हें सुधारने के लिए नम्र होना पड़ेगा। तब आप दूसरों का न्याय करने के बजाय उनकी सहायता कर पाएंगे।

घ. नम्रता की आवश्यकता हैः

१) यूहन्ना १३:८ – यदि मनुष्य की धार्मिकता प्रबल होती है और हम परमेश्वर की धार्मिकता को ग्रहण नहीं करते जो उसने हमारे लिए उपलब्ध कराई है, तब हमारा उद्धार नहीं हो सकता। परमेश्वर की धार्मिकता को अपनाने और उसके द्वारा किए गए कार्य को स्वीकार करने के लिए नम्रता की आवश्यकता है।

२) लूका १८:१०.१४ – धर्मी ठहरना और क्षमा किया जाना परमेश्वर के सामने नम्रता और टूटने के साथ जुड़ा हुआ है। यह केवल परमेश्वर पर भरोसा रखने और अपने आप पर भरोसा रखने से इंकार करने के साथ जुड़ा हुआ है। नम्रता आवश्यक है।

३) मत्ती ५:३ – परमेश्वर के राज्य में जीने के लिए नम्रता आवश्यक है। केवल नम्र लोग ही अपने आप का इंकार कर सकते हैं और यीशु को गले लगा सकते हैं। केवल नम्र लोग ही अपने ऊपर परीक्षा के प्रभुत्व का इंकार कर सकते हैं और यीशु के प्रभुत्व को स्वीकार कर सकते हैं।

४) लूका ४:१८ और ५:३१, ३२ – यीशु उनकी सेवाकाई करते हैं जो जरूरतमंद है। यीशु से प्राप्त करने और उसके द्वारा सेवा करने के लिए नम्रता (यह धारण की आपको यीशु की आवश्यकता है) की आवश्यकता है।

टिप्पणियाँ —

३. विषय #३: शुद्धता और पवित्रता।

क. मत्ती ५:८ – परमेश्वर शुद्ध और पवित्र है। उसे देखने के लिए, आपको भी शुद्ध होना चाहिए। हम कह सकते हैं कि अशुद्धता शुद्धता को नहीं देख सकती, और शुद्धता अशुद्धता को नहीं देख सकती (साथ ही देखें हबक्कूक १:१३)।

ख. लूका ३:१७ - ऐसा लगता है कि यीशु जो बपतिस्मा देते हैं, उसमें एक व्यक्ति के यीशु (पवित्र आत्मा) के पास आने के सशक्तिकरण के साथ-साथ एक न्याय, अनुशासन या शोधन (अग्नि) शामिल है। आग व्यक्ति को शुद्ध करने की प्रक्रिया की ओर इशारा कर सकती है।

ग. मत्ती २३:२५, २६ - आप बाहरी रूप को बदल सकते हैं और अभी भी भीतर से दूषित हो सकते हैं, लेकिन यदि आप भीतर के प्रदूषण को साफ करते हैं, तो बाहरी रूप भी बदल जाएगा। पवित्रता और शुद्धता वास्तविक होनी चाहिए।

घ. मत्ती १५:११ - स्वयं को अशुद्ध करना, जो कहा गया, सोचा गया, और किया गया (वास्तविकता) का परिणाम है। यह उसका परिणाम नहीं है जो खाया (सतही) जाता है। इसका लेना-देना उस से है जो हृदय से निकलता है।

ङ. मरकुस ७:१८.२० – मनुष्य उसी के द्वारा अपवित्र या कलंकित (अशुद्ध) होता है जो उसके हृदय से निकलता है।

४. विषय #४: समर्पण और विश्वासयोग्यता।

क. लूका ९:६२ - परमेश्वर के राज्य में होने के लिए चरम समर्पण की ज़रूरत है।

ख. लूका १६:१० - छोटी चीजों में विश्वासयोग्यता बड़ी चीजों में विश्वासयोग्यता की ओर ले जाती है। निहितार्थ यह है कि जब हम अपने आप को ''छोटी चीजों'' में विश्वासयोग्य साबित करते हैं, तब परमेश्वर हमें ''बड़ी'' चीजों पर अधिकार और जिम्मेदारी सौंपेंगे।

टिप्पणियाँ

५. विषय #५: ईमानदारी।

ग. लूका ३:१०-१३ – पश्चाताप के कार्य में दूसरों के प्रति ईमानदारी शामिल है (पद १३)।

घ. मत्ती ५:३७ – पाखंड का सबसे बड़ा इलाज ईमानदारी है। ईमानदारी का अभ्यास करें और इसे संभालकर रखें और आप पाखंड से बचे रहेंगे। पाखंड की शुरूआत तब होती है जब आप अपनी ''हाँ'' को ''हाँ'' से कम या अपनी ''न'' को ''न'' से कुछ अधिक होने देते हैं।

ग. विषयवस्तु #३: एकता।

१. विषय #१: एकता।

क. मत्ती १२:२५ - किसी भी समूह या संगठन की सफलता के लिए एकता आवश्यकता है।

ख. लूका ११:१७ - किसी भी राज्य की सफलता के लिए एकता आवश्यक है। जिस राज्य में फूट होती है, तो उसकी सामर्थ्य बर्बाद हो जाती है और वह गिर जाता है।

ग. लूका ९:५० - एकता की अवधारण में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि जो आपके विरोध में नहीं है वह आपकी ओर है।

घ. मत्ती १८:२० - यीशु एकता के बीच वास करते हैं। जब २ या ३ उसके नाम से इकट्ठा होते हैं जो वह उनके बीच में होता है।

ङ. यूहन्ना १७:२३ - सुसमाचार प्रचार में सफलता एकता पर निर्भर है।

च. मत्ती १८:१९ - सहमती के बीच में सामर्थ्य है। जब दो विश्वासी किसी एक बात के लिए सहमत होते हैं और उसे यीशु के नाम से मांगते हैं, तो उसका परिणाम सकारात्मक होता है। एकता सामर्थ्य है!

टिप्पणियाँ –

छ. मरकुस ३:६ – एक सार्वजनिक शत्रु के अस्तित्व का परिणाम अजनबी साथी हो सकते हैं। अर्थात, लोगों के दो समूह एक सार्वजनिक शत्रु से लडने के लिए एक साथ काम करेंगे, चाहे वे किसी और चीज के लिए एकमत न हों।

ज. लूका २३:१२ – पिछले सिद्धांत को दुनिया भर के उन समूहों में चित्रित किया गया है जो सामानय रूप से शत्रु है, यीशु के प्रति अपने सामान्य विरोध में एकता पा सकते हैं।

झ. लूका १२:५१-५३ - क्रूस विश्वासियों और अविश्वासियों को विभाजित करता है।

२. विषय #२: शांति।

क. मत्ती ५:९ - शांति को बढ़ावा देना परमेश्वर के परिवार का पारिवारिक व्यवसाय है।

ख. मत्ती १०:३४.३६ – साथ ही, हमें यह भी समझना चाहिए कि जब यीशु धरती पर आए तो वे इस अर्थ में शांति नहीं लाए कि सुसमाचार लोगों को तेजी से विभाजित करेगा। परिवार के लोग भी बंट जाएंगे।

३. विषय #३: शत्रु।

क. लूका ६:२७-२९ - यीशु की शिक्षा हमें चुनौति देती है कि हम अपने शत्रुओं से बैर न रखें। इसके परे, यह हमें चुनौति देती है कि हम अपने मार्ग से परे जाकर उनके लिए कुछ करें।

ख. मत्ती ५:३८-४२ – हमें आज्ञा दी गई है कि हम बुराई का विरोध न करें, बल्कि दूसरा गाल भी फेर दें। हमें अपने शत्रुओं से प्रेम करने, कष्ट सहने और दृढ़ रहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

टिप्पणियाँ –

घ. विषयवस्तु #४: धन।

४. विषय #१: धन।

क. परमेश्वर मुहैया करते हैं।

1) लूका १२:३१.३३ – राज्य की शिक्षा का संबंध यहाँ पृथ्वी पर धन होने से नहीं है। यह हमारी ज़रुरतों को पूरा करने से संबंधित है (पद ३१), लेकिन यह बहुत सारी सम्पत्ति जमा करने के विरोध में है (देखें लूका १२:१६-२१)। राज्य की शिक्षा लेने और रखने से अधिक देने के संबंध में है।

2) मत्ती ६:३३ – हमसे वादा किया गया है यदि हम परमेश्वर के राज्य की खोज करें तो हमारी ज़रूरतें पूरी की जाएंगी।

ख. सरल जीवनशैली (देखें मत्ती ६:३२) - मत्ती ६ के अनुसार आवश्यकताओं का विचार बहुत ही आधार भूत है। 'आवश्यकताओं' में दैनिक आधारभूत ज़रुरतों जैसे खाना और ओढ़ना (छत, कपड़े) शामिल हैं। हमें एक साधारण जीवनशैली का नेतृत्व करने में संतुष्ट रहना चाहिए।

ग. धन में एक स्वस्थ अरूचि।

१) लूका १२:१५ – हमारे जीवन में हमारी संपत्ति शामिल नहीं है।

२) लूका ३:१०-१४ – पश्चाताप के कार्य में दूसरों के प्रति करूणा और उदारता (पद ११), ईमानदारी (पद १३) और न्याय (पद १४) शामिल है। इन सभी मामलों में भौतिक चीजों में रूचि की कमी और सामाजिक न्याय की इच्छा पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

३) लूका १६:१-१२ – धन किसी भी अन्य वस्तु के समान केवल इस लायक है कि वह कितना अधिक को परमेश्वर के राज्य की ओर ले जाता है। धन सहित सभी चीजें, परमेश्वर के राज्य की ओर संकेत करने के तरीके के संदर्भ में होने का अपना कारण या उद्देश्य ढूंढती हैं।

टिप्पणियाँ –

घ. धन की बचत।

१) लूका १२:१६-२१ – भविष्य की चिंता धन की बचत का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। निहितार्थ यह है कि पैसा चिंता का इलाज नहीं कर सकता।

२) लूका १२:३१-३३ – राज्य की शिक्षा का संबंध यहाँ पृथ्वी पर धन होने से नहीं है। यह हमारी ज़रुरतों को पूरा करने से संबंधित है (पद ३१), लेकिन यह बहुत सारी सम्पत्ति जमा करने के विरोध में है (देखें लूका १२:१६-२१)। राज्य की शिक्षा लेने और रखने से अधिक देने के संबंध में है।

ङ. सब कुछ देना।

१) लूका ९:५७, ५८ – यीशु का अनुसरण करने का अर्थ है कुछ भी न रखने के लिए तैयार रहना। यह कसी भी चीज को न रखने के लिए तैयार रहना है जो आपकी है। सब कुछ परमेश्वर का है।

२) लूका १४:३३ – जब तब आप अपनी सम्पति पर नियंत्रण नहीं छोड़ते आप चेला नहीं बन सकते। हमें सब कुछ परमेश्वर को देने के लिए सचेत रूप से निर्णय लेना होगा। वह निर्णय करेगा कि हमें इसके साथ क्या करना चाहिए।

च. दो स्वामियों की सेवा करना असंभव है।

३) मत्ती ६:२४ – आप दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकते। आप धन और परमेश्वर के लिए एक साथ काम नहीं कर सकते। यह थोड़ा-थोड़ा दोनों नहीं है। यह या तो पहला है या दूसरा।

४) लूका १६:१३ – आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते क्योंकि, अंनतः पहला दूसरा के संबंध में प्रतिबंधी हो जाएगा। केवल एक ही परमेश्वर हो सकता है।

छ. पश्चाताप के संबंध में धन।

५) लूका १९:८ – पश्चाताप धन से संबंधित हो सकता है।

६) लूका ३:१०-१४ - पश्चाताप के कार्य में दूसरों के प्रति करूणा और उदारता (पद ११), ईमानदारी (पद १३) और न्याय (पद १४) शामिल है। इन सभी मामलों में भौतिक चीजों में रूचि की कमी और सामाजिक न्याय की इच्छा पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

टिप्पणियाँ

ज. उधार देना (देखें लूका ६:३५)। जब आप उधार देते हैं तो आपको यह बदले में कुछ वापस न पाने की इच्छा से करना चाहिए।

झ. सेवकों का वेतन।

७) लूका १०:४.७ - मजदूर मजदूरी का हकदार है। सेवकों को यह समझना चाहिए कि यह बड़े वेतन को न्यायोचित नहीं ठहराता। वास्तव में, यह विचार अपने स्वयं के साथ अपना कुछ भी नहीं लेने के संदर्भ में है जब वे सेवकाई करने जाते है। यहाँ विचार यह है कि सेवक इस योग्य है कि उसकी ज़रूरतें पूरी की जाएं (इन शब्दों पर ध्यान दें ''खाने और पीने'')।

८) मत्ती १०:८.१० - आत्मा की सेवकाई निःशुल्क है। वे जो सेवक हैं, उन्हें निश्चित रूप से लूका १०:४-७ की सच्चाई को पहचानना चाहिए, लेकिन ''सेवकाई'' कोई व्यवसाय नहीं है जिसमें किसी को धन के लिए धन की तलाश करनी चाहिए।

ञ. धनी लोग।

९) मत्ती १९:२३, २४ - धनी लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है क्योंकि उनके पास खोने के लिए बहुत कुछ है।

१०) यूहन्ना १०:१२, १३ - एक पासबांन को अपनी बुलाहट को एक ''नौकरी'' या ''कैरियर'' के रूप में नहीं सोचना चाहिए जिसके लिए उसे केवल वेतन मिलता है -यह और भी बहुत कुछ है! यदि यह केवल वेतन से प्रेरित होगा, तो जब सेवकाई में कठिनाई होगी तो वह इसे छोड़ने का इच्छुक होगा। वह अपनी भेड़ों का चरवाहा होना चाहिए। वह एक ''किराए का मजदूर'' नहीं होना चाहिए।

५. विषय #२: गरीब।

क. लूका १८:२२ – जब आप गरीबों को देते हैं, तो यह ऐसा है मानो आप अपने लिए स्वर्ग में धन जमा कर रहे हों।

ख. मरकुस १४:७ – हमेशा ऐसे गरीब लोग होंगे जिनकी हम सहायता कर सकते हैं।

टिप्पणियाँ –

ड़. विषयवस्तु #५: पाप और मृत्यु।

१. विषय #१: परीक्षा।

क. मत्ती २६:४१ और मरकुस १४:३८ – आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। अपने आप को शरीर के विरूद्ध बचाने और परीक्षा में पड़ने से रोकने के लिए, जागते रहना और प्रर्थना करना जरूरी है।

ख. लूका २२:४० और मरकुस ६:१३ - हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हम परीक्षा में न पड़ें।

ग. लूका ४:४,८,१२ - यीशु ने शैतान और उसके प्रलोभन से लड़ने के लिए परमेश्वर के वचन इस्तेमाल किया।

घ. ४:१० - हर बार जब आप परीक्षा पर जय पाते हैं, परिणाम यह होता है कि आप में सामर्थ्य और नियंत्रण जोड़ दिया जाता है (ध्यान दें कि कैसे यीशु पहली परीक्षा पर जय पाने के बाद और अधिक आक्रामक हो गया)।

२. विषय #२: पाप।

क. पाप के प्रकार।

१) यूहन्ना ९:४१ – पाप आपकी आवश्यता की पहचान के साथ बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है। आर्थात्, यह ''टूटेपन'' और नम्रता की कमी से जुड़ा हुआ है।

२) यूहन्ना १६:८, ९ – पाप का न्याय यीशु पर विश्वास न करने से संबंधित है।

३) मरकुस ३:२८ – पवित्र आत्मा की निंदा को क्षमा न करने वाला पाप माना जाता है।

टिप्पणियाँ —

ख. पाप के परिणाम।

१) मरकुस १५:३४ - यीशु को किसने मारा? कीलें, भाला, काँटें, मार-पीट आदि? वास्तव में हमारे पापों ने उसे मार डाला। यीशु का क्रूस हमारे पाप थे जिन्हें उसे अपने ऊपर ढ़ोना था। इस प्रकार, उसने पिता से अलगाव महसूस किया (रोमियों ६:२३)। पाप का परिणाम परमेश्वर से अलगाव है। एक विरोधाभासी तरीके से, हमारे पापों ने परमेश्वर को परमेश्वर से ही अलग कर दिया। छुटकारे की कीमत बड़ी थी!

२) मत्ती २७:४६ - पाप के परिणाम के कारण यीशु ने परमेश्वर से अलगाव को महसूस किया। जब हम पाप करते हैं हम अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लेते हैं (रोमियों ६:२३)।

३) लूका १६:१६ - परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना आसान नहीं है। यह हमारे पापी स्वभाव के विरूद्ध जाता है। इस प्रकार, एक बार जब परमेश्वर ने हमें इससे बाहर खींच लिया, तो हमें बलपूर्वक अपनी इच्छा, तर्क और जीवन को इसकी ओर धकेलना चाहिए।

४) मत्ती १३:१३ - जिनके पास सुनने के लिए कान है वे अपनी समझ में बढ़ेंगे। जिनके पास सुनने के कान नहीं है (उन्हें पद १४, १५ में वर्णित किया गया है, जो पाप के कठोर प्रभावों के कारण कठोर हृदय वाले हैं) उनकी समझ में कमी आएगी। याद रखें, सुनने के लिए कान होने का संदर्भ यीशु के साथ संबंध होने के संदर्भ में रखा गया है। पाप का परिणाम यह है कि आपके पास सुनने के लिए कान नहीं होंगे।

५) यूहन्ना ५:१४ - पाप से बीमारी हो सकती है।

६) मत्ती २४:१२ - जब अर्धम बढ़ता है तो लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जाता है। व्यवस्था की कमी विरोध और बैर की ओर ले जाती है। पाप का एक परिणाम प्रेम की घटी है।

ग. पाप का प्रत्युत्तर कैसे दें।

१) यूहन्ना ८:७ - हमें दूसरों का न्याय नहीं करना चाहिए क्योंकि हमारे स्वयं के जीवन में पाप है। हमें अपने स्वयं के पाप का प्रत्युत्तर दूसरों का न्याय न करने के द्वारा देना चाहिए।

२) लूका १७:३ - यदि पाप है तो डाँट भी होनी चाहिए।

टिप्पणियाँ –

घ. पाप का उपाय।

१) यूहन्ना १:२९ - यीशु परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा लिये जाता है, पुराने नियम में बलिदान के मेम्ने के विरीत जो इस्राएलियों के पाप को उठाता है। यीशु पाप के लिए अंतिम और पूर्ण उपाय है।

२) यूहन्ना ८:३१-३४ - वचन के पालन करने का परिणाम सत्य को जानना है। सत्य को जानने का परिणाम पाप से स्वतंत्रता है।

३) मत्ती २६:४१ और मरकुस १४:३८ - पाप का उपाय जागते रहना और प्रार्थना करना है।

३. विषय #३: मृत्यु।

क. मत्ती २६:५२ - जो युद्ध में जाते हैं, लड़ते हैं और तलवार उठाते है वे युद्ध या लड़ाई में तलवार के द्वारा मारे जाएगें। यह बोने और काटने के नियम के समान है।

ख. लूका २:२९ - उद्धार मृत्यु के बाद निर्धारित नहीं हो सकता (देखें लूका १०:२०; फिलि. ४:३; इब्रा. ९:२७)।

ग. मत्ती २२:३२ - जो मसीह में मरे हैं वे जीवित हैं क्योंकि परमेश्वर जीवतों का परमेश्वर है मुर्दों का नहीं।

घ. लूका २०:३५, ३६ – स्वर्ग में मृत्यु नहीं है।

ङ. मत्ती १५:३४ - मृत्यु पाप का परिणाम है। यह परमेश्वर से अलग होना है।

च. यूहन्ना १२:२४ – मृत्यु (स्वयं के लिए) परमेश्वर के राज्य में जीवंत उत्पादन की प्रक्रिया शुरू करती है।

छ. यूहन्ना १५:२ - मृत्यु की एक सतत प्रक्रिया है जो परमेश्वर हम में कार्यरत करता है। मृत्यु जीवन के साथ बदल दी जाती है। हमारे जीवन के वे क्षेत्र जो फल लाते हैं और अधिक फल लाने के लिए नियमित रूप से काटे और छांटे जाते है। परमेश्वर उन चीजों को काटता (मारता) है जिनकी हमारे जीवन में आवश्यकता नहीं है।

यीशु की शिक्षाएँ II

टिप्पणियाँ –

पाठ्यक्रम निष्कर्षः

यह याद रखें कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ''संसार'' नामक अध्ययन क्षेत्र के लिए नये नियम की सुसमाचार की पुस्तकों से केवल एक सर्वेक्षण है। प्रत्येक विषय स्वयं एक संपूर्ण पाठ्यक्रम के भीतर गहन अध्ययन मे शामिल हो सकता है। आपको इस पाठ्यक्रम को किसी अन्य MOTMOT पाठ्यक्रम के पूरक के रूप में और अपनी शिक्षा की सेवकाई के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

यीशु की शिक्षाएँ II

टिप्पणियाँ –